बृहत् भारत के विश्वकर्मा

श्री विश्वेश्वरैया

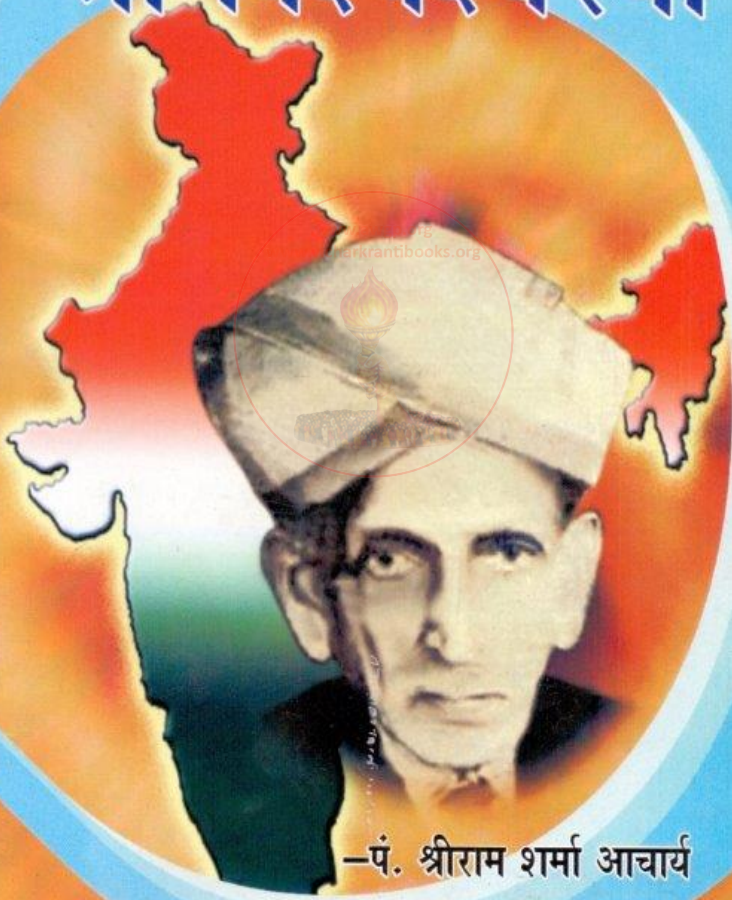

—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

बृहत् भारत के विश्वकर्मा— श्री विश्वेश्वरैया

श्री विश्वेश्वरैया जिन दिनों मैसूर के दीवान थे, एक दिन सरकारी काम से कहीं दौरे पर जा रहे थे। यह सूचना किसी प्रकार मार्ग में एक स्कूल में पहुँच गई। मास्टर इस अवसर को उत्तम समझकर सड़क पर पहुँचकर खड़ा हो गया और जब श्री विश्वेश्वरैया की कार आई तो उसे रोककर उसने प्रार्थना की कि वे स्कूल के बच्चों को दर्शन दें। यद्यपि उनको जाने की जल्दी थी, पर छोटे बच्चों के आग्रह को वे टाल न सके और गाड़ी से उतरकर पाँच-सात मिनट के लिये स्कूल के कमरे में चले गये। मास्टर ने कहा—"कृपया बच्चों के सम्मुख दो शब्द कह दीजिये।" विश्वेश्वरैया बिना पहले से सोचे-समझे और तैयारी किये किसी सार्वजनिक संस्था में नहीं बोलते थे, पर बच्चों के प्रेमवश उन्होंने यों ही दो-चार बातें कह दीं। बच्चे खुश हो गये और उनको बारंबार धन्यवाद देने लगे।

पर विश्वेश्वरैया ने अनुभव किया कि उनका भाषण छात्रों के उपयुक्त न था। इसलिये वे मास्टर को सूचना देकर दो-चार दिन बाद फिर उस स्कूल में पहुँचे और लड़कों के सामने एक सारगर्भित और शिक्षाप्रद भाषण दिया, जिससे छात्रवृंद ही नहीं, अपितु समस्त ग्रामवासी बहुत प्रभावित हुये। अगर वे यह सोचकर रह जाते कि छोटे लड़के अच्छे या साधारण भाषण के अंतर को नहीं समझ सकते तो उनसे कोई कुछ कहने वाला नहीं था। पर उनका आरंभ से ही यह सिद्धांत था कि कोई भी काम कभी घटिया ढंग से नहीं करना चाहिए। हल्के ढंग से उस समय काम भले ही चल जाय पर उसमें स्थायित्व नहीं आ सकता। इसलिये कैसा भी अवसर क्यों न हो, मनुष्य को अपना स्तर नहीं घटाना चाहिये। ऊँचा स्तर रखने से उसका प्रभाव अच्छा ही पड़ता है और आज नहीं तो कल लोग उसकी तरफ आकर्षित होते ही हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसी प्रकार ईमानदारी की प्रवृत्ति भी उनमें जन्मजात थी। जब उनको अपनी जन्मभूमि मैसूर का दीवान बनाया गया तो सबसे पहले वे नियुक्ति के पत्र को लेकर अपनी माता के पास गये और उसे यह संवाद सुनाकर एक प्रार्थना भी की कि "मुझसे कभी किसी की सिफारिश न करना।" वे जानते थे कि वंश का स्थायी निवास-स्थान होने के कारण यहाँ हमारे अनेक संबंधी और पुराने इष्टमित्र रहते हैं। ऐसा सुअवसर पाकर उनमें से अनेक उचित और अनुचित लाभ उठाना चाहेंगे, जिससे लोगों को आक्षेप करने का मौका मिलेगा, यह सोचकर उन्होंने पहले ही अपना आदर्श घर वालों के सामने स्पष्ट कर दिया और जब तक दीवान के पद पर रहे, अपने किसी रिश्तेदार को सरकारी नौकरी पर नियुक्त नहीं किया।

आपको आजीवन देश-सेवा में संलग्न रहने के उपलक्ष्य में देश की सबसे बड़ी उपाधि 'भारतरत्न' प्रदान की गई तो उसे ग्रहण करने को आपको दिल्ली जाना पड़ा। सरकारी मेहमान होने के कारण आप राष्ट्रपति भवन में ठहराये गये। तीसरे दिन राजेंद्र बाबू के पास पहुँचे और विदा माँगी। राजेंद्र बाबू ने कुछ दिन और ठहरने को कहा, तो उन्होंने बतलाया कि "राष्ट्रपति भवन में तीन दिन ठहरने का नियम लिखा हुआ है। उसके अनुसार अब मैं इस स्थान को छोड़कर कहीं अन्यत्र रहूँगा।" राजेंद्र बाबू ने कहा—"यह पुराना नियम यों ही चला आ रहा है। आप इसका ख्याल न करें।" पर श्री विश्वेश्वरैया फिर वहाँ न ठहरें और अपने रहने की किसी और जगह व्यवस्था कर ली।

एक बड़ी सरकारी नौकरी करते हुये सच्चाई और ईमानदारी का इतनी दृढ़ता के साथ पालन करने वाले श्री मोक्षगुंडम् विश्वेश्वरैया का जन्म सन् १८६१ में कोलार (मैसूर) के एक गरीब घर में हुआ था। उनके पिता की इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि उनको अच्छी तरह लिखा-पढ़ा सकें। पर इस बालक के मन में पढ़ने का इतना शौक था कि अनेक प्रकार की विघ्न-बाधा सामने होते हुए भी उसने गाँव के स्कूल की पढ़ाई घर में रहकर ही पूरी कर ली। पर इसके बाद वहाँ प्रगति का रास्ता बंद था और यदि आगे पढ़ना हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तो किसी दूरवर्ती स्थान में जाना अनिवार्य था। पर उनके पिता के पास तो गाँव की पढ़ाई का खर्च भी न था, हाईस्कूल और कॉलेज की व्यवस्था स्वप्न में भी संभव न थी।

स्वावलंबन द्वारा उच्च शिक्षा—

पर इस बालक ने, जिसके हृदय में विद्याध्ययन की सच्ची आकांक्षा मौजूद थी, इन कठिनाइयों की तरफ कुछ भी ध्यान न दिया। वह अपने गाँव को छोड़कर बंगलौर पहुँच गया। बंगलौर एक बड़ा शहर है और वहाँ बिना पैसे के किसी का गुजारा होना संभव नहीं। इधर बालक को पैसा मिलने का कोई साधन न था। पर उसने हिम्मत न हारी। वह एक दूर के रिश्तेदार के छोटे से घर में रहने लगा। घर में स्थान की कमी होने से एक मंदिर में सोने की व्यवस्था बनाई। भोजन के लिये अपनी आयु से भी छोटे कुछ बालकों का ट्यूशन करना आरंभ कर दिया। इस प्रकार बाधाओं और कठिनाइयों से जूझते हुये श्री विश्वेश्वरैया ने क्रमशः मैट्रिक और बी० ए० की परीक्षाएँ पास कर लीं।

मद्रास के जिस कॉलेज से उन्होंने बी० ए० की परीक्षा पास की थी, उसका अंग्रेज प्रिंसिपल इनकी विद्याध्ययन की लगन और सौम्य स्वभाव से बहुत प्रभावित हुआ और उसने पूना के साइंस-कॉलेज के प्रिंसिपल के नाम एक पत्र लिखकर विश्वेश्वरैया को वहाँ भेज दिया। उक्त पत्र में इनकी प्रशंसा पढ़कर व गुणों का परिचय पाकर साइंस-कॉलेज का अध्यक्ष भी बहुत संतुष्ट हुआ और उसने इनको इंजीनियरी कॉलेज में दाखिल कर लिया। साथ में उसने बजीफा की व्यवस्था कर दी, जिससे इनका ट्यूशन करना छूट गया और ये पूर्ण मनोयोग के साथ कॉलेज की पढ़ाई करने लगे।

परिश्रमी तो ये पहले से ही थे, अब कॉलेज में सब तरह की सुविधा पाकर इन्होंने एक निश्चित कार्यक्रम बनाकर तदनुसार रहन-सहन और अध्ययन करना आरंभ किया। 'टाइम टेबिल' के अनुसार प्रत्येक कार्य नियत समय पर करने से वे अपने उद्देश्य में प्रशंसनीय सफलता प्राप्त करने लगे और इंजीनियरिंग की परीक्षा उन्होंने समय से पहले ही बड़ी योग्यता के साथ उत्तीर्ण कर लीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनको बंबई विश्वविद्यालय में सबसे सर्वोच्च स्थान मिला और इसलिये कॉलेज से निकलते ही सहायक इंजीनियर की नौकरी मिल गई।

सार्वजनिक लाभ के निर्माण कार्य—

तेईस वर्ष की उम्र में ही इतनी बड़ी नौकरी मिल जाने से यद्यपि उनकी आर्थिक समस्याएँ हल हो गईं, पर उनका उद्देश्य केवल पेट भर लेना अथवा आराम की जिंदगी व्यतीत कर लेना न था। वरन् इंजीनियरी के क्षेत्र में, जिसमें उस समय तक अंग्रेजों का ही बोलबाला था और भारतीय प्रायः सहायक पद पर ही रखे जाते थे, कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य करके दिखाना था। इसलिये उन्होंने आरंभ से ही अपना काम पूरे परिश्रम और दक्षता से करना आरंभ किया। नौकर होने के कुछ महीने बाद ही उनको धूलिया जिले की एक नदी के नीचे होकर सिंचाई के लिये बड़े नल लगाने का कार्य सौंपा गया। कार्यारंभ के कुछ समय बाद ही वर्षा प्रारंभ हो गई और नदी के तले को खोदकर तथा चट्टानों को काटकर जितनी खाई खोदी जाती थी, उसमें बार-बार बालू भर जाती थी। उसे निकालने में खर्च बढ़ता था, इसलिये उन्होंने अपने बड़े अधिकारी को लिखा कि—"अच्छा हो इस कार्य को बरसात के पश्चात् किया जाय।" इस पर अफसर के यहाँ से लिखकर आया कि—"सबसे पहले निर्माण-कार्य में इस प्रकार अनुत्साह प्रकट करना शोभनीय नहीं है।" बस वे सब प्रकार की कठिनाइयों का ध्यान छोड़कर काम पर डट गये और लगातार नदी के किनारे पर रहकर कार्य का निरीक्षण करने लगे। उच्च अधिकारी की मुस्तैदी से सब कर्मचारी भी पूरी मेहनत के साथ काम करने लगे। परिणामस्वरूप नल लगाने का कार्य संतोषजनक ढंग से होने लगा और उसके पूरे होने पर बड़े इंजीनियर ने अपने शब्दों को स्वयं ही काटकर उनकी बहुत प्रशंसा लिखकर भेजी।

वर्तमान समय में हम सरकारी कामों में जो लापरवाही और तरह-तरह की खराबियाँ देखते हैं, उसका मुख्य कारण यही होता है कि बड़े अधिकारी स्वयं परिश्रम न करके कार्य भार छोटे कर्मचारियों पर छोड़ देते हैं और वे लोग प्रायः कार्य की सफलता और उत्तमता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की अपेक्षा 'कमाई करने' पर अधिक ध्यान देते हैं। यही कारण है कि आजकल बड़े-बड़े महत्त्वपूर्ण कार्यों में हद दर्जे की खराबी दिखलाई पड़ती है और लाखों रुपया गबन होने के समाचार पढ़ने में आते हैं। इस सबका कारण बड़े अधिकारियों की सुस्ती या अन्य प्रकार की बेईमानी ही होती है।

इसके पश्चात् तो उनको एक के बाद एक महत्त्व के काम दिये जाने लगे। उनकी सफलताओं को देखकर बड़े इंजीनियर ने पूछा कि "तुमने इंजीनियरिंग महकमे की विभागीय परीक्षा के लिये प्रार्थना-पत्र क्यों नहीं भेजा ? इसके बिना न तो नौकरी पक्की समझी जाती है और न आगामी वेतन वृद्धि का मार्ग खुलता है।" आपने तो यह सोचकर कि अभी उनको नौकरी करते ११ महीने ही हुये हैं, जब कि अधिकांश इंजीनियर उसमें २-३ वर्ष बाद बैठते हैं, प्रयत्न नहीं किया था, पर बड़े इंजीनियर ने आग्रह करके इन्हें प्रविष्ट करा दिया और उसमें उत्तीर्ण होकर ये बीस महीने के भीतर ही प्रथम श्रेणी में पहुँच गये, तब उनका वेतन भी ५०० रु० मासिक हो गया। आजकल की कीमत में यह लगभग पचास हजार रु० के बराबर है।

इस प्रकार कुछ वर्ष तक विभिन्न स्थानों में कार्य करते हुए उनको अपनी योग्यता दिखलाने का एक विशेष अवसर प्राप्त हुआ। सक्खर (सिंधु) में सरकार की तरफ से 'वाटर वर्क्स' का निर्माण किया जा रहा था। उसके योरोपीयन इंजीनियर का देहांत हो जाने से एक नये योग्य कार्यकर्ता की आवश्यकता पड़ी और उसके लिए श्री विश्वेश्वरैया का नाम पेश किया गया। उनके बड़े अफसर ने उनकी बहुत प्रशंसा लिखकर भेजी और सरकार ने इस नियुक्ति के लिए तुरंत मंजूरी दे दी। वे सन् १८५४ के फरवरी मास में सक्खर पहुँचे। वहाँ 'वाटर वर्क्स' बनाने में मुख्य कठिनाई यह थी कि सिंधु नदी के गंदले जल को साफ करने के लिए तीन टंकियों के निर्माण की आवश्यकता थी, उनके लिए वहाँ की नगरपालिका के पास पर्याप्त धन न था। इसलिये श्री विश्वेश्वरैया ने एक अन्य उपाय सोचा और नदी तट के समीप ही दो कुएँ खोदकर उनका जल पंप

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

द्वारा वाटर वर्क्स के तालाब में भेजा जाने लगा। इस तरह बहुत कम खर्च में नगर को काफी मात्रा में जल मिल जाने की व्यवस्था हो गई। यद्यपि आपने यह कार्य एक सरकारी कर्मचारी की हैसियत से ही किया था, पर उद्देश्य की पूर्ति की तरफ उनकी हार्दिक लगन और तत्परता को देखकर समस्त नगर निवासियों ने उनका बड़ा आभार माना और जलाशय के बाहर एक शिलालेख लगाकर उनकी सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। बंबई के गवर्नर लार्ड सैंडहर्स्ट ने भी उक्त वाटर वर्क्स का उद्घाटन करते हुए कहा था—

"आपने इस निर्माण-कार्य का जो इतिहास पढ़कर सुनाया है, वह अत्यंत रोचक है। इससे ज्ञात होता है कि आपने एक अत्यंत योग्य इंजीनियर की सेवाएँ प्राप्त करने के लिये बड़ी सावधानी से कार्य किया।"

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सक्खर नगरपालिका ने भी अपनी तरफ से एक प्रस्ताव पास करके कृतज्ञता का भाव प्रकट किया कि "श्री विश्वेश्वरैया ने सक्खर की कष्टप्रद जलवायु को सहन करते हुये बड़ी सावधानी, योग्यता, उत्साह और आत्म-त्याग की भावना से कार्य किया और अपेक्षाकृत थोड़े समय में वाटर-वर्क्स का निर्माण-कार्य पूरा कर दिया।"

श्री विश्वेश्वरैया का यह उदाहरण बतलाता है कि मनुष्य किसी भी छोटे या बड़े दर्जे अथवा स्थिति पर काम करते हुए सच्चाई और ईमानदारी का परिचय दे सकता है और उसके द्वारा जनता तथा अधिकारियों की भी प्रशंसा प्राप्त कर सकता है। जो लोग सरकार की, समय की, लोगों को शिकायत करते रहते हैं और सभी लोगों को पक्षपाती, स्वार्थी अथवा भ्रष्टाचारी बतलाते हैं, वे वास्तव में स्वयं ही अयोग्य अथवा दोषयुक्त होते हैं। ऐसा बहुत ही कम संभव है कि वास्तव में सच्चाई और ईमानदारी से अपना कर्तव्यपालन करते रहने वाले व्यक्ति को अधिक समय तक उपेक्षित दशा में रहना पड़े। इसलिये हमारा पहला कर्तव्य यही है कि अपना सुधार करें और जो कुछ काम करना पड़े, उसमें सेवा की भावना रखें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसानों के हित का संरक्षण—

इसके पश्चात् आपको पूना जिले की सिंचाई व्यवस्था का सुधार करने को भेजा गया। यह भू-भाग बंबई प्रांत में सिंचाई की दृष्टि से दूसरे नंबर का समझा जाता था। पर नहरों का पानी वितरण करने में वहाँ उचित व्यवस्था का अभाव था। किसान लोग मनमाने ढंग से पानी लेते रहते थे, जिससे बहुत-सा पानी बरबाद जाता था। इसलिये श्री विश्वेश्वरैया ने एक नई व्यवस्था बनाई, जिससे प्रत्येक विभाग के किसानों को बारी-बारी से दस दिन तक पानी मिलता था। यद्यपि यह प्रणाली सबके लिये लाभदायक थी, पर जिन किसानों को इच्छानुसार जल का प्रयोग करने का अभ्यास पड़ा था, उन्होंने इसका विरोध करना आरंभ कर दिया। वे लोग पूना के निकट के ही रहने वाले थे और अनेक प्रभावशाली नागरिकों से उनका संबंध भी था, इसलिये इस संबंध में पूरा आंदोलन ही खड़ा हो गया। लोकमान्य तिलक के 'केसरी' पत्र में भी इस संबंध में बहुत-सी शिकायतें छपीं। यद्यपि सरकार ने इस संबंध में पूरा अधिकार इन्हीं को दे रखा था, पर जनता की भावनाओं का ख्याल करके इन्होंने किसी तरह की जबर्दस्ती करने का विचार नहीं किया। इसके बजाय ये सार्वजनिक कार्यकर्ताओं से मिले और फर्ग्युसन कॉलेज के प्रिंसिपल श्री परांजपे से कहकर कॉलेज के हाल में किसानों की एक सभा आयोजित की। सभा में प्रमुख किसानों तथा सिंचाई विभाग के छोटे कर्मचारियों को भी उपस्थित रहने को कहा गया। श्री विश्वेश्वरैया ने किसानों को समझाया कि हम इस बात की जाँच करने को तैयार हैं कि प्रत्येक क्षेत्र में दस दिन के भीतर जितना पानी दिया जायेगा, वह उसके लिये पर्याप्त होगा या नहीं ? वर्तमान समय में किसानों को जितना पानी मिल रहा है, हमारी व्यवस्था के अनुसार उसकी अपेक्षा अधिक ही मिल सकेगा। अंतर केवल इतना है कि उसकी सुव्यवस्था हो जाने पर बरबादी रुक जायेगी। अगर किसान नहर के जल का बँटवारा आपस में स्वयं कर सकें तो हम इसका प्रबंध उनको दे देने को भी राजी हैं। हमारा उद्देश्य यही है कि सबको समान रूप से जल उपलब्ध हो सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसा न हो कि एक किसान तो आवश्यकता से अधिक लेकर उसे नष्ट करे और दूसरे के खेतों को कम मिलने से फसल खराब हो जाए।

श्री विश्वेश्वरैया के सहानुभूतिपूर्ण और निष्पक्ष वक्तव्य का प्रभाव सब लोगों पर पड़ा और किसान तथा नागरिक दोनों ने उनकी व्यवस्था की उपयोगिता को स्वीकार कर लिया। केसरी के सहकारी संचालक श्री एन० सी० केलकर ने इस समस्या की पूर्ण तरह जाँच-पड़ताल की और इसे सब प्रकार से लाभदायक स्वीकार किया। तब उन्होंने इस संबंध में कई लेख 'केसरी' में लिखे, जिनसे अधिकांश लोगों का मत परिवर्तन हो गया और समस्या सहज ही में सुलझ गई।

बाँधों के लिये स्वचालित फाटक—

पूना नगर और उसके पास बहने वाली एक नहर में 'लेक फाइफ' नामक जिस झील से पानी आता था, उसके बाँध का निर्माण पुराने ढंग पर हुआ था और इस कारण उसमें से प्रतिवर्ष बहुत-सा पानी निकलकर बरबाद हो जाता था। इधर शहर में प्रायः पानी की कमी की शिकायत बनी रहती थी। जब इसको ठीक करने का भार श्री विश्वेश्वरैया को दिया गया, तो इन्होंने उस समस्या का बारीकी के साथ अध्ययन कर एक नई विधि ढूँढ़कर निकाली। निरीक्षण करने से मालूम हुआ कि झील की सतह ऊँची है और उसमें बरसात का पूरा पानी नहीं रुक सकता। इससे जब पानी बाँध की चोटी से ६ से ८ फुट तक ऊपर चढ़ता तो वह बहकर बाहर निकल जाता था। झील की सतह को तो अधिक गहरा बना सकना संभव न था, इसलिये उन्होंने बहुत सोच-विचार कर 'स्वचालित' फाटकों की एक योजना बनाई। इसके अनुसार बाँध में कई ऐसे फाटक लगाये गये, जो पानी के ऊपर चढ़ने पर उसे आठ फुट की ऊँचाई तक रोके रहते थे। जब पानी इससे भी अधिक चढ़ता था तो वे स्वयमेव खुलकर फालतू पानी को निकाल देते थे और फिर अपने आप ही बंद हो जाते थे। इस उपाय से झील के पानी का परिमाण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

२५ प्रतिशत बढ़ गया और पूना के नागरिकों को नलों से पर्याप्त जल उपलब्ध होने लग गया।

आरंभ में योरोपियन इंजीनियरों को यह विश्वास नहीं हुआ कि कोई भारतीय इंजीनियर ऐसा आविष्कार कर सकता है। पर जब ये फाटक संतोषजनक के रूप में काम करने लगे और तत्पश्चात् ग्वालियर और मैसूर के बाँधों में भी लगाये गये, तब उनको विवश होकर भारतीय मस्तिष्क की श्रेष्ठता स्वीकार करनी पड़ी।

अदन में नियुक्ति—

अब एक ऐसी घटना घटित हुई, जिससे श्री विश्वेश्वरैया की अप्रत्याशित प्रगति होने के साथ ही उनका एक विरोधी दल भी तैयार हो गया। जिस जमाने की यह बात लिखी जा रही है, उस समय अदन का बंदरगाह भारतीय शासनाधिकार में ही था। यद्यपि वह इस देश से दो हजार मील के फासले पर था और वहाँ अंग्रेजी सेना की एक बहुत बड़ी छावनी थी, पर शासन-सुविधा की दृष्टि से उसे बंबई के गवर्नर के आधीन कर दिया गया था। सन् १९०६ में इंग्लैंड की सरकार ने भारत को सूचित किया कि अदन में पानी के नलों तथा मल के निकास की व्यवस्था ठीक नहीं है, जिससे वहाँ के निवासियों पर बुरा असर पड़ता है। इसलिये वहाँ कोई ऐसा सुयोग्य इंजीनियर भेजा जाए, जो इन विषयों पर अदन की नगरपालिका को उचित सलाह दे सके और वहाँ की योजना को ठीक ढंग से कार्यान्वित करा सके।

जब यह सूचना बंबई के गवर्नर के पास भेजी गई, तो उन्होंने इस विषय पर गंभीरतापूर्वक विचार करके श्री विश्वेश्वरैया को ही इसके लिये सबसे अधिक उपयुक्त समझा। यद्यपि उनके पास अंग्रेज इंजीनियर काफी संख्या में थे और वह स्वयं भी अंग्रेज ही थे, पर उनके सामने मुख्य प्रश्न कार्य के सुचारु रूप से पूरा होने और अपने सम्मान का था। उन्हें मालूम था कि श्री विश्वेश्वरैया ने सफाई और जल-व्यवस्था के कार्यों में विशेष दक्षता प्राप्त कर ली है और वे बड़ी सूझ-बूझ के साथ सामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस प्रकार अपने मुकाबले में एक भारतीय का अधिक योग्य स्वीकार किया जाना यद्यपि अंग्रेज इंजीनियरों को बहुत अखरा और उनमें से कई श्री विश्वेश्वरैया के प्रति द्वेष-भाव भी रखने लगे, पर सरकारी आज्ञा से उनको अदन भेज ही दिया गया। वहाँ पहुँचकर वास्तव में उन्होंने बड़े परिश्रम और योग्यता से कार्य किया और सफाई तथा पेय जल के नलों की ऐसी व्यवस्था की कि जिससे वहाँ रहने वाले सैनिकों और नागरिकों को बड़ी सुविधा अनुभव होने लगी। आपकी रिपोर्ट और योजना की प्रशंसा करते हुए अदन स्थित ब्रिटिश सेना के मेजर जनरल बराथ ने सरकार को लिखा—

"श्री विश्वेश्वरैया ने, जिन्हें मल-विकास के प्रश्न पर सुझाव देने को नियुक्त किया गया था, एक अत्यंत लाभदायक रिपोर्ट तैयार की है, जो कि १० जनवरी, १६०७ को सरकार को भेजी जा चुकी है। हालाँकि मल-मार्ग निर्माण की बड़ी जरूरत थी, परंतु ताजा जल देने के लिए शीघ्र ही कोई कदम उठाना उससे भी अधिक आवश्यक था। कुछ समय पश्चात् बंबई सरकार ने भी उसे कार्यान्वित करने का आदेश दे दिया। इस प्रकार आप अपनी प्रथम विदेश यात्रा में ही अपनी योग्यता और ईमानदारी का सिक्का, वहाँ के छोटे-बड़े व्यक्तियों के हृदयों पर जमा दिया।

सरकारी नौकरी का त्याग—

लोगों को उस समय बड़ा आश्चर्य हुआ, जब उन्होंने सुना कि श्री विश्वेश्वरैया ने समय से बहुत पूर्व ही अचानक नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया। सरकार के सर्वोच्च अधिकारी उनके काम से बहुत प्रसन्न थे और उनकी योग्यता के उपलक्ष्य में उनको पुराने अंग्रेज इंजीनियरों की अपेक्षा भी बड़ी जल्दी-जल्दी लगातार उच्च पदों पर नियुक्त किया जा रहा था। उनके महकमे के प्रधान अधिकारी उनकी कार्यकुशलता और ईमानदारी से बड़े प्रभावित और सदा उनकी प्रशंसा किया करते थे। पर यह सब होने पर भी जब उन्होंने देखा कि उनको विशेष रूप से तरक्की मिलने के कारण अनेक व्यक्ति उनको अपने मार्ग में बाधक समझते हैं और उस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारण पीछे-पीछे उनके विरुद्ध झूठा-सच्चा प्रचार करते हैं तो उन्होंने तुरंत ही नौकरी को छोड़ने का निश्चय कर लिया।

वर्तमान समय में लोगों के स्वार्थपूर्ण व्यवहार और रुपया के मामले में तरह-तरह के बेईमानी के कामों को देखते हुए श्री विश्वेश्वरैया का यह कार्य साधारण मनुष्यों को आश्चर्यजनक जान पड़ता है। पर जो व्यक्ति सत्य और न्याय के भारतीय आदर्श के मर्म को समझते हैं, उनके लिये इसमें कोई अस्वाभाविक या कठिन बात नहीं प्रतीत होगी। हमारे प्राचीन मनीषियों की तो मान्यता यही थी कि "सत्य से ही सूर्य तपता है, अग्नि प्रज्ज्वलित होती है, मेघ वर्षा करते हैं, वायु चलती है।" उनका आशय यही था कि यदि मनुष्य भी सत्य का पालन करेंगे और अपने व्यवहार में सदैव ईमानदारी का ख्याल रखेंगे तो उनका और समाज का अस्तित्व कायम रहेगा और सब कोई सुखी रह सकेंगे।

संतोष का विषय है कि श्री विश्वेश्वरैया जैसे महामानव आज भी उस सिद्धांत को कार्यरूप में परिणत करके जनता का मार्गदर्शन कर रहे हैं। उनको सरकार ने जितने अधिकार और बड़े-बड़े कार्य करने के अवसर दिये, उनमें वे चाहते तो अन्य व्यक्तियों की तरह लाखों या करोड़ों रुपया भी जमा कर सकते थे। पर इसके विपरीत उनको जो अधिक रुपया कारखानों और उद्योग-धंधों से पारिश्रमिक स्वरूप मिला, उसको भी उन्होंने सार्वजनिक सेवा के कार्यों में लगा दिया। यही कारण है कि आज भी हम उनका स्मरण करते हैं और पाठकों के सम्मुख उनका उदाहरण एक मार्गदर्शक के रूप में उपस्थित करते हैं। अन्यथा यहाँ ऐसे व्यक्ति मौजूद थे, जिनको उसी जमाने में प्रांतीय गवर्नर का पद दिया गया और उसी के अनुकूल 'लार्ड' की पदवी से विभूषित किया गया था। पर आज सामान्य जनता तो क्या पढ़े-लिखे भी उनका नाम नहीं जानते। इसलिये हमको यह निश्चित रूप से समझ लेना चाहिए कि सर्वसाधारण में स्थायी मान्यता और सम्मान उसी व्यक्ति को प्राप्त हो सकता है, जो अपना स्वार्थ कम करके दूसरों के उपकार के लिये कुछ परिश्रम और त्याग करेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैदराबाद और मैसूर में निर्माण-कार्य—

सरकारी नौकरी से छुट्टी पाकर आप योरोप भ्रमण के लिये चले गये। इटली के मिलान नगर में आपको एक पत्र मिला, जिसमें बंबई के गवर्नर का एक संदेश था कि हैदराबाद (निजाम) की सरकार नगर के पुनर्निर्माण और जल विकास की योजना तैयार करने के लिये सुप० इंजीनियर श्री विश्वेश्वरैया की, जो छुट्टी पर है, सेवाएँ प्राप्त करना चाहती है।" साथ ही हैदराबाद के वित्त मंत्री ने जो उन दिनों इंग्लैंड गये हुए थे, इसी आशय का एक पत्र आपके पास भेजा। मित्रों का आग्रह और कार्य के महत्त्व को समझकर आप १९०९ में हैदराबाद पहुँच गये।

हैदराबाद में मूसी और ईसा दो नदियों का पानी शहर के बीच में होकर बहता था। सन् १९०८ में ऐसी वर्षा हुई कि बाढ़ के कारण शहर में तबाही आ गई। केवल एक कोलसाबाड़ी मुहल्ले में ही दो हजार व्यक्ति बह गये। श्री विश्वेश्वरैया ने कई महीनों तक समस्त क्षेत्र की पूरी तरह जाँच-पड़ताल करके शहर से कुछ दूरी पर दो बड़े जलाशय बनाने की योजना तैयार की, जिनमें दो हजार करोड़ घनफुट पानी जमा किया जा सके। इस प्रकार उन्होंने नगर के लिये बाढ़ का खतरा सदा के लिये दूर कर दिया। नगर के भीतर नदी के दोनों किनारों को ऊँचा करके उसके आस-पास सुंदर बाग-बगीचे और सैर-सपाटे के स्थान बनाने का भी सुझाव दिया गया, जिससे बाढ़ से बचाव के साथ ही नगर के सौंदर्य में वृद्धि होने का लाभ बहुत बड़ा था।

श्री विश्वेश्वरैया जब हैदराबाद में बाढ़-योजना को तैयार कर ही रहे थे, उसी समय उनको मैसूर के दीवान श्री आनंदराव का पत्र मिला, जिसमें लिखा था—

मैसूर के महाराज को आपकी सेवाएँ प्राप्त करके हर्ष होगा, क्योंकि आपने उच्च उपाधियाँ प्राप्त की हैं और विशिष्ट सेवाएँ की हैं। महाराज को इस बात का विश्वास है कि जो प्रस्ताव आपके सामने रखा गया है, उसे आप अवश्य स्वीकार करेंगे। इससे आपको अपनी जन्म-भूमि के विस्तृत क्षेत्र में सिंचाई के साधनों के विकास के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर्याप्त अवसर प्राप्त होंगे। महाराज यह जानते हैं कि आप लोकसेवा के अवसरों को सरकारी वेतन से अधिक महत्त्व देते हैं। मैसूर में इस प्रकार के अवसर आपको सदैव प्राप्त होते रहेंगे।"

बात यही थी कि सचाई की कदर सब जगह होती है। श्री विश्वेश्वरैया के अब तक के कार्यक्रमों से लोगों को विश्वास हो गया था कि वे अधिकांश लोगों की तरह धन को ही सर्वोपरि महत्त्व देने वाले नहीं हैं, वरन् उनका लक्ष्य सदैव अपने देशवासियों की अधिकाधिक लाभदायक सेवा करते रहना है। यह बात सरकारी नौकरों में बहुत कम पाई जाती है। जो लोग आर्थिक भ्रष्टाचार में लिप्त हो जाते हैं, उनकी तो बात ही छोड़ दीजिये, पर जो इससे बचे रहते हैं, वे भी अहंकार और शान के वशीभूत होकर सामान्य जनता के प्रति न तो शिष्टता का व्यवहार करते हैं, न अपने वास्तविक कर्तव्य का पालन करते हैं। ऐसे लोग चाहें तो अपने मन में बड़प्पन का अनुभव करते रहें, पर लोगों की निगाह में वे गिरे हुये ही रहते हैं और अधिकांश लोग सामने या पीठ पीछे उनकी निंदा, दोष-दर्शन ही करते रहते हैं। श्री विश्वेश्वरैया के चरित्र से हम यह शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं कि लोक और परलोक में जीवन को कृतकार्य बनाने का सच्चा मार्ग कौन-सा है ?

दीवान के पद पर—

श्री विश्वेश्वरैया मैसूर में चीफ इंजीनियर के पद पर नियुक्त होकर गये थे, पर उनकी योग्यता और सच्चाई से प्रभावित होकर महाराज ने उनको शीघ्र ही रियासत का दीवान (कार्य संचालक) बना दिया। यद्यपि एक इंजीनियर का शासन-व्यवस्था से कोई संबंध नहीं होता, पर श्री विश्वेश्वरैया ने अपने अध्यवसाय तथा परोपकार वृत्ति के कारण उस पद पर रहकर भी इतने जन-हितकारी कार्य कर दिखाए, जिससे उनको नये मैसूर का निर्माता समझा जाने लगा। उन्होंने सिंचाई के लिये 'कृष्णराज सागर' और लोहे के उत्पादन के लिये भद्रावती का इस्पात (लौह) कारखाना तथा मैसूर विश्वविद्यालय आदि ऐसी अनेक योजनाओं को आरंभ किया और सफल बनाकर दिखाया कि जिससे उस राज्य की समृद्धि तथा विकास में बहुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधिक सहयोग मिला। पर इन सभी कार्यों के पूरा करने में श्री विश्वेश्वरैया को कैसी बाधाओं और अवरोधों का सामना करना पड़ा उसका वर्णन पढ़ने से यह जान पड़ेगा कि उनको जनता के हितों का सदैव कितना अधिक ध्यान रहता था ?

कृष्णराज सागर बाँध की योजना में उस समय २५३ लाख रु० के खर्च का अनुमान किया गया था। रियासत के कुछ अधिकारियों ने महाराज पर दबाव डाला कि इस कार्य में इतनी बड़ी रकम खर्च न की जाए। इससे उन्होंने ढील डाल दी और मालूम हुआ कि यह योजना खटाई में पड़ गई। यह देखकर श्री विश्वेश्वरैया ने राज्य की नौकरी छोड़ने का विचार कर लिया और कुछ दिनों की छुट्टी लेकर उत्तर भारत के भ्रमण के लिये चले गये। वहाँ से लौटने पर भी जब उन्होंने देखा कि योजना के संबंध में कुछ नहीं हो रहा है, तो मौन रहकर केवल अपने दफ्तर का काम ही करने लग गये।

जब महाराज ने इस परिवर्तन को देखकर कारण पूछा, तो उन्होंने साफ-साफ कह दिया कि "विकास-कार्यों के लिये दी गई सुविधाओं से मुझे काफी असंतोष हुआ है। चूँकि अब रियासत में कोई ऐसा काम नहीं रहा, जिसके प्रति उत्साह दिखाया जा सके, अतः मैं नौकरी छोड़कर जाने का विचार कर रहा हूँ।"

इस पर महाराज ने कहा—"आप जल्दी न करें। अगले सप्ताह मुझसे मैसूर में मिलना। वहीं योजना पर पूरी तरह विचार किया जायेगा।" इसके पश्चात् महाराज ने शीघ्र ही संपूर्ण योजना को ज्यों का त्यों मंजूर करके कार्यारंभ का आदेश दिया।

इसके पश्चात् दूसरी कठिनाई मद्रास सरकार ने उपस्थित की। वह भी कावेरी नदी पर कृष्णराज सागर से ६० मील नीचे एक बाँध की योजना तैयार कर चुकी थी। पर जब 'कृष्णराज सागर' का जलाशय बन जाता तो मद्रास सरकार के जलाशय को उतना पानी नहीं मिलता, जितना वे चाहते थे, इसलिये उन्होंने इस योजना को रोकने का प्रस्ताव किया। तब श्री विश्वेश्वरैया की सलाह से इस मामले की अपील भारत सरकार के पास की गई। वायसराय ने मैसूर के दावे को सही माना और १२४ फीट के बजाय ८० फीट ऊँचा बाँध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनाने की अनुमति दे दी। पर श्री विश्वेश्वरैया ने बाँध का नीचे का भाग उतना ही चौड़ा बनवाया, जितना १२४ फीट ऊँचे बाँध के लिये आवश्यक होता है। वे जानते थे कि हमारा दावा न्यायोचित है और अंत में सरकार को उसे स्वीकार करना ही पड़ेगा। जब इस विवाद का निर्णय करने के लिये एक समिति बनाई गई तो उसने श्री विश्वेश्वरैया की दलीलों को ठीक बतलाया और बाँध यथासमय तैयार होकर किसानों को सिंचाई के लिये पानी तथा उद्योग-धंधों को बिजली मिलने लग गई।

जनता के हित का लक्ष्य—

यह समझना ठीक न होगा कि इस प्रकार के निर्माण-कार्य इंजीनियरिंग विभाग वाले करते ही रहते हैं और यह उनका नियमित पेशा ही है। विश्वेश्वरैया चाहते तो मैसूर राज्य के अधिकारियों और फिर मद्रास सरकार का विरोध होने पर इस कार्य को स्थगित कर देते और अतिरिक्त श्रम तथा जिम्मेदारी से बचे रहते हैं। उनके दर्जे के अधिकांश सर्वोच्च अधिकारी प्रायः निरीक्षण कार्य करते रहकर ही अपनी 'ड्यूटी' पूरी कर देते हैं और कोई उनसे कछ नहीं कहता। पर विश्वेश्वरैया जी के हृदय में देश के विकास और उत्थान करने की लगन थी, वे जनता की सुख-सुविधा की वृद्धि करना अपना कर्तव्य समझते थे, इसलिये उन्होंने कई प्रकार का विरोध होने पर भी योजना को हर तरह के प्रयत्नों से जीवित रखा और अंत में उसे ठीक समय पर पूरा करके ही छोड़ा। इससे जनता और राज्य का कितना लाभ हुआ, यह बात निम्न तथ्यों से प्रकट होती है—

(१) कृष्णराज सागर उस समय तक भारत में बने समस्त जलाशयों (बाँधों) से बड़ा था।

(२) कावेरी की बाँयी ओर वाली नहर को एक पहाड़ी में, पौने दो मील लंबी एक सुरंग बनाकर उसमें से गुजारा गया है। सिंचाई नहर की यह सुरंग भारत भर में सबसे लंबी है।

(३) 'कृष्णराज सागर योजना' से कई प्रयोजन सिद्ध होते हैं। इससे एक लाख से भी अधिक एकड़ भूमि में सिंचाई का विस्तार हुआ है और वह बढ़ता ही जा रहा है। इससे कोलार की सोने की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खानों को अधिक बिजली मिलने लग गई है। बंगलौर, मैसूर तथा राज्य के अनेक गाँवों और कस्बों को घरेलू इस्तेमाल तथा कारखानों के लिये बिजली प्राप्त होने लगी है। इससे गन्ने की खेती बढ़ गई है, जिससे चीनी मिलों को प्रोत्साहन मिला है। मैसूर तथा बंगलौर की कपड़ा मिलों के अतिरिक्त अन्य बहुत से उद्योग-धंधों को बिजली मिलने लग गई है।

(४) कुछ समय पूर्व मैसूर के इंजीनियरिंग विभाग ने इस योजना के संबंध में एक आर्थिक रिपोर्ट तैयार की थी, जिससे मालूम हुआ कि इस पर राज्य की तरफ से कुल मिलाकर लगभग दस करोड़ रुपया खर्च हुआ था। कुछ वर्ष बाद इससे जनता को ५½ करोड़ रुपया वार्षिक का लाभ होने लगा और राज्य को भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों के द्वारा एक करोड़ रुपया वार्षिक की आमदनी हो रही थी। इस लोक कल्याणकारी योजना की प्रशंसा करते हुए महात्मा गांधी ने मैसूर की एक सार्वजनिक सभा में कहा था—

'कृष्णराज-सागर, जो संसार के प्रमुख जलाशयों में से एक है, अकेला ही श्री विश्वेश्वरैया की कीर्ति बढ़ाने के लिये काफी है। इसके अतिरिक्त रियासत में जो अन्य उद्योग-धंधे शुरू किये गये हैं, उनसे पता चलता है कि भारत के अन्य राज्यों की अपेक्षा मैसूर कितना आगे निकला जा रहा है।"

जन-जीवन में शिक्षा की महत्ता—

जब श्री विश्वेश्वरैया की लोक-कल्याण की भावना से प्रसन्न होकर मैसूर के महाराज ने उनको आग्रहपूर्वक रियासत के दीवान के पद पर नियुक्त कर दिया, तो उन्होंने छह वर्ष की अवधि के भीतर रियासत की कायापलट कर दी। वे पत्तों को सींचने के बजाय जड़ को सींचने का सिद्धांत मानने वाले व्यक्ति थे। इसलिये उन्होंने कहा कि सब प्रकार की उन्नति और प्रगति की जड़ शिक्षा है और अशिक्षा से दोष तथा दुर्भाग्य की ही वृद्धि हो सकती है। उन्होंने मैसूर की प्रतिनिधि-सभा के सम्मुख अपने विचारों का स्पष्टीकरण करते हुए कहा—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"आधुनिक राष्ट्रों द्वारा शिक्षा को जो महत्त्व दिया जा रहा है, अपनी विदेश-यात्राओं के दौरान मैं उससे बड़ा प्रभावित हुआ। मुझे तो इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया कि हमारी आर्थिकहीनता का सबसे बड़ा कारण शिक्षा की उपेक्षा ही है। इस दिशा में, मैं उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में की गई अपनी जापान-यात्रा के समय सबसे अधिक प्रभावित हुआ था। जापानी नेताओं ने यह रहस्य जान लिया था कि शिक्षा ही समस्त प्रगति का आधार है। जापानी शिक्षा विभाग का लक्ष्य यह था कि जापानियों को योरोपियन ढंग से सोचने तथा काम करने का अभ्यास डाला जाय। इस दिशा में जापान द्वारा जो सबसे पहला कदम उठाया गया, वह यह था कि समग्र देश में एक 'शिक्षा-संहिता' जारी की गई। उसका आशय जापान के सम्राट् मिकाडो ने इन शब्दों में समझाया—

"सामान्य जीवन के लिए जो समस्त ज्ञान आवश्यक है और वह उच्च कोटि का ज्ञान जिसके द्वारा बड़े-बड़े अफसर, किसान, व्यापारी, कारीगर, चिकित्सक आदि अपना-अपना धंधा चलाते हैं, शिक्षा द्वारा ही प्राप्त होता है। इस बात का निश्चय कर लिया गया है कि शिक्षा का इस प्रकार प्रसार किया जायेगा कि भविष्य में ऐसा कोई गाँव न रहे, जिसका कोई परिवार अशिक्षित हो और न कोई ऐसा परिवार होगा जिसमें कोई व्यक्ति अपढ़ हो।"

"जापान के 'टोकियो-विश्वविद्यालय' में शिक्षा-सिद्धांतों में जो सुधार किये गये, वे इस प्रकार वर्णित हैं—'नैतिक चरित्र का विकास, देशभक्ति व स्वामी-भक्ति की भावना का विकास तथा अमली धंधों के संबंध में आवश्यक ज्ञान की प्राप्ति।' अनुशासन का पाठ पढ़ाने के लिये कई स्कूलों में फौजी कवायद सिखाई जाती थी। बच्चों को सदा प्रसन्नचित्त रखा जाता था और उन्हें नैतिकता, देशभक्ति, राजभक्ति तथा मानव-संबंधों की शिक्षा दी जाती थी। जिस बात ने मेरा ध्यान अधिक आकर्षित किया, वह थी स्त्री-शिक्षा का विकास। मैंने देखा कि जहाँ जापान के स्कूलों में १५ लाख लड़कियाँ पढ़ रही थीं, वहाँ भारत जैसे विशाल देश में स्कूल जाने वाली लड़कियों की संख्या केवल ४० हजार थी। (यह आँकड़े सन् १८९८ के हैं।)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"टोकियो और क्योटो के प्रोफेसरों ने बताया कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिये पुस्तकें खरीदना जरूरी नहीं है। प्रोफेसर विद्यार्थियों को कक्षा में नोट लिखा देते हैं, इसके अतिरिक्त वे पुस्तकालय से भी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं। विश्वविद्यालयों में जो शिक्षा दी जाती थी, वह क्रियात्मक होती थी। इसलिए परीक्षा पास करते ही उनको सरकारी अथवा गैर-सरकारी नौकरियाँ मिल जाती थीं।

"जापान में विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर कठोर परिश्रम करते थे और उनका जीवन बड़ा सादा होता था। हालाँकि वे अपनी योग्यता के बल पर अन्यत्र इससे बहुत अधिक वेतन पा सकते थे, परंतु वे उच्च भावनाओं से प्रेरित होकर सादा जीवन व्यतीत करते हुए विश्वविद्यालय में थोड़े वेतन पर ही संतोष कर लेते थे।"

जब इन बातों का मिलान हम अपने देश की अवस्था से करते हैं, तो बड़ी निराशा होती है। यद्यपि समय का परिवर्तन हो जाने से विद्यार्थियों की संख्या काफी बढ़ गई है, स्कूल जाने वाली लड़कियों की संख्या तो सौगुनी से अधिक हो गई है, पर यदि विद्यार्थियों के स्तर को देखा जाए, तो यह सब निरर्थक जान पड़ता है। यहाँ शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त कर लेना रह गया है। चाहे वह किसी भी प्रकार प्राप्त की जाए। अधिकांश शिक्षा केवल पुस्तकीय है, जिससे परीक्षोत्तीर्ण हो जाने पर भी युवकों को काम के लिये मारे-मारे फिरना पड़ता है। अनुशासन और सदाचार की तो और भी मिट्टी पलीद हो रही है और आये दिन ऐसी घटनायें देखने और सुनने में आती हैं, जिनसे शर्म के मारे सिर नीचा कर लेना पड़ता है।

खेद है कि स्वतंत्रता प्राप्त कर लेने के पश्चात् यह स्थिति सुधरने के बजाय दिन पर दिन बिगड़ती जा रही है। इस समय तो ऐसा जान पड़ता है कि स्कूलों और विद्यालयों के द्वारा विद्यार्थियों को समाजोपयोगी और कर्तव्यनिष्ठ बनाने के बजाय निकम्मा, दुश्चरित्र और उच्छृंखल बनाया जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में सर्वत्र घोर अव्यवस्था दिखाई पड़ रही है और इसका अहितकर प्रभाव समस्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समाज पर पड़ रहा है। इसलिये यदि यहाँ के शिक्षा व्यवस्थापक श्री विश्वेश्वरैया द्वारा वर्णित जापान के उदाहरण से शिक्षा ग्रहण करें तो कुछ भलाई अवश्य हो सकती है।

राष्ट्रीय चरित्र का विकास—

शिक्षा की ही तरह श्री विश्वेश्वरैया चरित्र को भी राष्ट्रोत्थान का मुख्य आधार मानते हैं। वास्तव में ये दोनों ही ऐसे सुदृढ़ स्तंभ हैं, जिनके ऊपर किसी जाति के गौरव का महरावदार द्वार खड़ा किया जा सकता है। जिस व्यक्ति का चरित्र उज्ज्वल है और जिसने अपने धंधे की उचित शिक्षा प्राप्त कर ली है, उसकी सफलता अधिकांश में सुनिश्चित है। जो बात व्यक्ति के संबंध में कही जाती है, वही राष्ट्र के संबंध में भी समझनी चाहिए। इसलिये उन्होंने अपने देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए यहाँ के नेताओं को चेतावनी दी है—

"यदि आप एक अच्छे राष्ट्र की नींव रखना चाहते हैं, तो उसके नागरिकों को उत्तम बनाइये। एक सफल राष्ट्र वह होता है, जिसके नागरिकों की बहुसंख्या कुशल, चरित्रवान् और अपने कर्तव्य को समझने वाली हो। जैसा कि हम सब जानते हैं कि व्यापार की नींव साख होती है। यह साख विश्वास पर निर्भर है और विश्वास चरित्र के सहारे खड़ा होता है।

"एक कुशल राष्ट्र बनाने के लिये यह आवश्यक है कि देश के योग्य सलाहकारों के अनुसार आधारभूत राष्ट्रीय आदर्शों, जिम्मेदारियों और विशिष्ट नीतियों की एक योजना और कार्यक्रम बनाया जाए। इस समय हमारे देश में अधिकांश लोग न तो प्रशिक्षित हैं और न उन्हें अनुशासन की कोई परवाह है। केवल बहुत थोड़े लोग ऐसे हैं, जो वांछित स्तर पर पूरे उतरते हैं। लोगों की बहुसंख्या तो पढ़ना-लिखना भी नहीं जानती और रूढ़ियों की शिकार बनी हुई है।

"राष्ट्रीय चरित्र के विकास की नीति सरकार की दीर्घकालीन नीतियों में होनी चाहिए। जो भारतीय यह चाहते हैं कि भारत का संसार के अन्य राष्ट्रों में अपनी कुशलता और उच्च राष्ट्रीय चरित्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के लिये नाम हो, उन्हें उचित है कि वे इस नीति को पूरा प्रोत्साहन दें। अंततः चरित्र और कुशलता (शिक्षा) से ही उच्च कार्यक्षमता, सुखमय जीवन और दीर्घायु प्रप्त होती हैं। इस दृष्टि से पश्चिम के विकसित देशों की, जैसे अमेरिका की जनता ने, जो प्रतिमान् (स्टैंडर्ड) प्राप्त किये हैं, उनमें और वर्तमान भारतीय प्रतिमानों में बहुत अंतर है।

'अमेरिका जैसे देशों के लोग क्यों अधिक समृद्धिशाली, प्रगतिशील और दीर्घायु हैं ? इसका कारण यही है कि उन्हें सर्वोत्तम प्रकार की शिक्षा-सुविधाएँ उपलब्ध हैं और वे संसार की सभी समस्याओं के प्रति जागरूक हैं। उनका जीवन योजनाबद्ध और अनुशासित होता है। औसत अमेरिकी-शिक्षा, व्यावहारिक कुशलता, यांत्रिक उपकरणों और विश्व-ज्ञान की दृष्टि से कहीं अधिक संपन्न हैं। अमेरिका के लोग अधिक परिश्रमी, संगठनकर्ता और उद्यमकर्ता होते हैं। उनके नेता योग्य तथा क्षमता संपन्न होते हैं। उनके अपने धंधों में कई पीढ़ियों के अनुभवों का निचोड़ इकट्ठा किया होता है, जो उनका मार्गदर्शन करता है।

"इसके विपरीत औसत भारतीय इन्हीं कमियों के कारण परंपराओं पर आधारित जीवन बिताता है। प्रगतिशील जीवन व्यतीत करने के लिये उसे किसी का मार्गदर्शन नहीं मिलता। इसमें कोई संदेह नहीं कि बहुत से ऐसे लोग भी हैं, जो अशिक्षित होते हुए भी अपने सीमित क्षेत्र में बड़ी समझदारी का परिचय देते हैं। पर साधारणतः शिक्षा की कमी के कारण वे ऊँचे जीवन-स्तर से वंचित रह जाते हैं।"

श्री विश्वेश्वरैया स्थूल-जगत् के कार्यकर्ता और विचारक थे, इसलिये उन्होंने उन प्रत्यक्ष तथ्यों पर ही विचार किया है, जिनके प्रभाव से संसार की अग्रगण्य जातियाँ उच्च पद प्राप्त करके सुख-समृद्धि का जीवन व्यतीत कर रही हैं। इसके विपरीत हमारे यहाँ के औसत दर्जे के व्यक्ति और 'पंडित' नामधारी भी सदा परलोक, भक्ति-ज्ञान की चर्चा उठाते रहते हैं। यहाँ आजकल भी ऐसे पढ़े-लिखे लोगों की कमी नहीं, जो इन्हीं बातों के आधार पर अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को 'श्रेष्ठ' और योरोप, अमेरिका वालों को 'निकृष्ट' मानते रहते हैं। हम पाश्चात्य भौतिकवाद के समर्थक नहीं हैं और इसी सीरीज की पुस्तकों में बराबर उसकी हानियों को प्रकट कर चुके हैं। पर साथ ही हम यह समझते हैं कि केवल मौखिक अध्यात्मवाद भी निरर्थक है। आलस्य अथवा उद्योगहीनता के फलस्वरूप भूखे-नंगे बने रहना और उसे त्याग और अध्यात्म का नाम देना मूर्खता या ढोंग ही माना जा सकता है। जैसे महात्मा गांधी कहा करते थे कि 'अहिंसा' वीरों का मार्ग है। जो लोग अपनी निर्बलता या कायरता के कारण 'अहिंसा' का सिद्धांत स्वीकार करने लगते हैं, उनकी अहिंसा झूठी है। इसी प्रकार हम भी कह सकते हैं कि जो कोई अध्यात्म के नाम पर अपने निकम्मेपन अथवा उद्योगहीनता का समर्थन करना चाहता है, वह सरासर गलत रास्ते पर है।

श्री विश्वेश्वरैया ने जापान और अमेरिका आदि का उदाहरण देकर भारतवासियों को यही समझाने का प्रयत्न किया है कि मानव-जन्म पाकर अपनी स्थिति सुधारने का प्रयत्न करना मनुष्य मात्र का कर्तव्य है। हमारे वेद, शास्त्र भी उद्योगी व्यक्तियों ने ही रचे हैं। सभी तीर्थ स्थान, बड़े-बड़े मंदिर आदि भी परिश्रमी और कर्मठ लोगों के द्वारा निर्माण किये गये हैं। दान, धर्म, पुण्य के जितने भी सही या गलत काम देखने में आते हैं, उन सबकी जड़ में उद्योग ही प्रधान दिखाई पड़ता है। इसलिये भारतवासियों को मध्य काल में उत्पन्न शुष्क वेदांत (अकर्मण्यता) अथवा भ्रममूलक 'भाग्यवाद' जैसी धारणाओं को त्यागकर शिक्षा और चरित्र निर्माण के क्षेत्र में ऐसी प्रगति करनी चाहिये, जिससे लोक और परलोक दोनों सिद्ध हो सकें।

राष्ट्रीय सुरक्षा की समस्याएँ—

श्री विश्वेश्वरैया राष्ट्रीय निर्माण के आकांक्षी थे। उनके क्रियाशील मस्तिष्क में सदैव राष्ट्रोत्थान और राष्ट्र-रक्षा के विचार और उपाय उठते रहते थे। संसार के अन्य देशों का निरीक्षण करके वे उनकी उन्नति का रहस्य समझते और उनमें जो बातें अपने देश के लिये हितकारी प्रतीत होतीं, उनका यहाँ प्रचार करते। उनका कहना था कि स्वतंत्र हो जाने पर जहाँ देश की प्रगति और विकास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के कितने ही रास्ते खुल गये हैं, वहाँ कितने ही संकट और जिम्मेदारियाँ भी उसके ऊपर आ गई हैं। उन्होंने किसी प्रकार की स्वार्थभावना के कारण नहीं, केवल मातृभूमि के प्रति अपना कर्तव्य-पालन करने की दृष्टि से निरंतर देश के नेताओं का ध्यान इस ओर आकर्षित किया और स्वयं भी जब तक शक्ति रही, उन कामों की पूर्ति में हिस्सा लिया। भारत की प्रगति के लिये जब योजनाबद्ध प्रयत्न करने का विचार किया गया, तो उन्होंने इस संबंध में जो सम्मति प्रकट की, उसका सारांश इस प्रकार था—

"योजना का अर्थ है काम करने का वह तरीका, जो विशेष प्रकार के विकास, उद्देश्य या प्रयोजन को पाने के लिये आवश्यक समझा जाए। जनप्रशासन में जनता की भलाई के लिये योजना बनाने का विचार अंतर्निहित है। किसी भी राज्य या क्षेत्र के लिए 'आर्थिक-आयोजना' एक ऐसे योजनाबद्ध कार्यक्रम की रूपरेखा होगी, जिसमें अपने साधनों और मानव-शक्ति को सर्वोत्तम ढंग से काम में लाकर, जनता की आय, जीवन-स्तर और भौतिक समृद्धि को बढ़ाकर, देश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने का उद्देश्य पूरा किया जाए। प्रारंभ में विकास कार्यों का सामान्य उद्देश्य निम्न होने चाहिये—

(१) जनता के लिये पर्याप्त काम और अन्न इकट्ठा करना।

(२) गुण-मात्रा की दृष्टि से काम बढ़ाना, उत्पादन में उन्नति करना, रोजगार बढ़ाना तथा आय में वृद्धि करके जीवन-स्तर को ऊँचा उठाना।

(३) साथ ही धीरे-धीरे अन्य राष्ट्र-निर्माण के कामों को आगे बढ़ाना और उनके द्वारा ऐसा स्वस्थ तथा समृद्ध राष्ट्र बनाने का प्रयत्न करना, जो कई दृष्टियों से आत्मनिर्भर तथा आत्मतुष्ट हो।

श्री विश्वेश्वरैया की सम्मति में भारत का व्यक्तिगत या राष्ट्रीय-जीवन अभी तक 'आयोजित' नहीं रहा। ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि पहले कभी इस देश में सरकारी संगठन ने आर्थिक समस्याओं का संपूर्ण रूप से सामना किया हो। यहाँ समग्र राष्ट्रीय प्रगति के प्रति सचेत रहने या उसे बढ़ावा देने की प्रथा ही नहीं रही।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अब जबकि सरकार ने विकास कार्यों को बढ़ाने तथा सुधारों के निमित्त राष्ट्रीय योजना आयोग स्थापित कर दिया है, तो उसको सबसे पहले जो काम हाथ में लेने चाहिये वह यह है—देश के साधनों की दक्षता से पूरा लाभ उठाकर लोगों को अधिक सोचने और अधिक काम करने के योग्य बनाना, अन्न की उपज बढ़ाना, देश के साधनों को काम में लाकर आर्थिक शक्ति बढ़ाना और लोगों के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाना।

पर योजना के विभिन्न कार्यक्रमों की पूर्ति करने से पहले हमको कुछ जड़ की बातों को सुधार और व्यवस्था कर लेना जरूरी है। हमारे सामाजिक संगठन में जो त्रुटियाँ हैं यदि उनको बिना दूर किये नवीन कार्यक्रमों का भारी ढाँचा खड़ा कर दिया गया, तो पूरा राष्ट्रीय भवन ही बोझ के कारण चरमरा कर बैठ जायेगा। श्री विश्वेश्वरैया ने इस संबंध में दो-चार मुख्य बातें ये बतलाई थीं—

जनसंख्या की समस्या—

"भारत की जनसंख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, जबकि इस अनुपात से न तो उत्पादन में वृद्धि हो रही है और न संतोषजनक ढंग से रहन-सहन के लिए आय में बढ़ोत्तरी हो रही है। न्यूयार्क से प्राप्त हाल ही के एक संवाद से पता चला है कि १९४३ में संसार की जनसंख्या २ अरब ३१ करोड़ ६० लाख थी। यह संख्या सन् १९०० की जनसंख्या से ७० करोड़ अधिक है। चीन और जापान की तरह भारत में भी जन्म तथा मृत्यु की दर बहुत बढ़ी-चढ़ी है। विभाजन के पूर्व भारत की जनसंख्या जो १९३१ में ३५ करोड़ ३० लाख थी, सन् १९४५ में ४० करोड़ ३० लाख हो गई। विभाजन के बाद भारत की जनसंख्या ३३ करोड़ ७० लाख थी और हाल के अनुमानों से पता चला है कि वह प्रति वर्ष ३२ लाख ५० हजार बढ़ जाती है।

सन् १९४३ में जब कलकत्ता की सड़कों पर भुखमरी से मरने वालों के चित्र अखबारों में प्रकाशित हुए, तो उन्हें देखकर भारत की जनता को बड़ा भारी धक्का लगा। इससे पता चलता है कि देश की जनसंख्या, देश में उपलब्ध खाद्य-सामग्री से अधिक हो गई है। अतः

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस महासंकट से बचने के तीन-चार उपाय हैं, जिन्हें अपनाकर इस संकट को ५०-७५ वर्ष तक टाला जा सकता है—

"यह उपाय या तो अधिक अन्न उपजाने के रूप में हो सकते हैं या परिवार नियोजन के रूप में जैसाकि आबादी रोकने के लिये बहुत से सभ्य देशों में होता है। अन्यथा हमारा देश अकाल के भय से मुक्त नहीं हो सकता।"

"अधिक अन्न उपजाओ"—

देश में अन्न की कमी को दूर करने के लिये जो 'अधिक अन्न उपजाओ' आंदोलन चल रहा है, उसके संबंध में श्री विश्वेश्वरैया ने सम्मति दी थी कि—

"अधिक अन्न उपजाओ" आंदोलन को ठीक ढंग से लागू करने के लिये प्रत्येक गाँव में निम्नलिखित आँकड़े रखना जरूरी हैं—

(१) अन्न की खेती वाली भूमि का क्षेत्रफल।

(२) उत्पादन का अनुमान और पिछली फसल की कीमत।

(३) प्रत्येक क्षेत्र में जमा अन्न का अनुमान।

अगर यह आँकड़े इकट्ठे कर लिये जायें और उनके कागजात को ठीक ढंग से रखा जाए, तो ग्रामीण जनता के लिये आँकड़ों को ध्यान में रखते हुए बहुत कुछ समझना सरल हो जायेगा।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ वर्षा के विषय में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। जहाँ प्रायः हर साल ही ऐसा होता है कि देश के किसी न किसी भाग में सूखा पड़ जाता है। किसी-किसी वर्ष तो इसकी लपेट में कोई भी पूरा इलाका आ सकता है और दूर-दूर तक विनाश फैल सकता है, जैसाकि १९४३ में बंगाल में हुआ था। इसलिये यह आवश्यक है कि देश में अधिक से अधिक जलाशय बनाकर उनमें सिंचाई के लिये पानी जमा करके रखा जाए।

ग्राम औद्योगीकरण योजना को अपनाने के लिये यह जरूरी है कि या तो ग्राम समितियाँ बनाकर उनके इलाके में अधिक अन्न उपजाने का काम उन्हें सौंप दिया जाए या औद्योगिक तथा अन्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्पादनों को इस ढंग से नियोजित किया जाय कि वे अपनी आवश्यकताओं के लिये अतिरिक्त अन्न दूसरी जगहों से खरीद सकें।

दो वर्षों के लिये खाद्य सामग्री—

औद्योगीकरण योजना में यह तजबीज भी है कि प्रत्येक ग्राम-समिति को अपने क्षेत्र में दो वर्ष के लिये अन्न का भंडार जमा करने की जिम्मेदारी भी सौंप दी जाए। इसका मतलब यह नहीं कि प्रत्येक परिवार अलग-अलग रूप से दो वर्षों के लिए खाद्य जमा करें, बल्कि यह कि उस ग्राम-क्षेत्र में एकत्रित अन्न वहाँ की सारी आबादी के लिए दो वर्ष के लिये पर्याप्त हो।

लगभग सौ वर्ष पूर्व हमारे देश के गाँवों के समृद्ध लोग इस बात की सावधानी रखते थे और आमतौर से साधारण अकाल के दिनों में दूसरे लोगों के भरण-पोषण की जिम्मेदारी ले लेते थे।

जनसंख्या पर रोक—

"जनसंख्या इतनी तेजी से बढ़ रही है कि यदि इसे रोकने के उपाय न किये गये तो संभव है कि भविष्य में अकालों की संख्या बढ़ जाए। अनुभव इस बात को सिद्ध करता है कि अधिक बच्चे होने से लोगों के पास स्वस्थ परिवार पालने का मौका नहीं रहता और वे सुखी तथा स्थिर जीवन नहीं बिता सकते।

"प्रगति के इस युग में छोटे परिवार वाले व्यक्ति अधिक सुख-सुविधायें प्राप्त कर सकते हैं और अपना जीवन-स्तर ऊँचा उठा सकते हैं। जिन देशों के लोग अपने परिवारों का ठीक ढंग से नियोजन करते हैं, वे भूख और गरीबी से बचे रहते हैं।

जनसंख्या की समस्या पर श्री विश्वेश्वरैया ने जो कुछ कहा है—वह बहुत सोच-विचार कर और अपने देशवासियों को चेतावनी देने के उद्देश्य से ही कहा गया है। वे उन लोगों में से नहीं थे, जो किसी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर लोगों को आतंकित करने के उद्देश्य से कहें। इसलिये उन्होंने इस समस्या से उत्पन्न होने वाले खतरों का बहुत संक्षेप में ही वर्णन किया है। पर आजकल इसकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विभीषिका पहले की अपेक्षा भी दिन पर दिन बढ़ती जा रही है और योरोप-अमेरिका के बड़े-बड़े वैज्ञानिक कह रहे हैं कि यदि तुरंत ही इसका कोई कारगर उपाय न किया गया तो सौ-पचास वर्ष के भीतर यह ऐसा रूप धारण कर लेगी कि इससे समाज का स्तर अत्यंत गिर जायेगा और उसका अस्तित्व नष्ट होने की संभावना उत्पन्न हो जायेगी।

परिवार नियोजन मंडल—

जनसंख्या को सुलझाने का जो एकमात्र व्यवहारिक उपाय विद्वानों की समझ में आया है, वह 'परिवार-नियोजन' है। अब सरकारी प्रचार के कारण लोगों ने इसका नाम सुन लिया है और इसके विषय में कुछ बातें भी सुनने में आती रहती हैं। गैर जिम्मेदार लोग इस संबंध में उलटी-सीधी बातें करते रहते हैं। अनेक लोगों की दृष्टि में तो यह केवल एक हँसी का-सा विषय प्रतीत होता है और वे इस संबंध में तरह-तरह की गपशप करके अपना मनोरंजन करते रहते हैं। पर वास्तव में यह एक गंभीर और विचारणीय समस्या है और जनसंख्या की समस्या पर विचार करते हुए स्वभावतः उन्होंने 'परिवार-नियोजन' का भी जिक्र किया है। वे लिखते हैं—

"परिवार नियोजन-मंडल कुछ समय से अमेरिका में काम कर रहा है। इसका काम जन्म-निरोध द्वारा आबादी को सीमित रखने के बारे में प्रचार करना है। हमारे देश में भी पिछले कुछ वर्षों में कई बड़े-बड़े महिला-सम्मेलन हुए, जिनमें जन्म-निरोध पर बल दिया गया था। यदि भारत में जन्म-निरोध को न अपनाया गया, तो हो सकता है कि भविष्य में लोगों को अन्न के अभाव का सामना करना पड़े।

"सरकार 'परिवार-नियोजन' के सिद्धांत को लोकप्रिय बनाने के लिये बहुत कुछ कर सकती है। वह इस संबंध की विभिन्न समस्याओं के सुलझाने और उसका प्रचार करने के लिये चिकित्सा-विभाग की एक शाखा खोल सकती है।"

श्री विश्वेश्वरैया ने जो सुझाव दिया था, वह अब कार्यरूप में परिणित होता दिखाई पड़ रहा है। सरकार कई प्रकार से परिवार नियोजन का प्रचार कर रही है और सरकारी अस्पतालों में इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संबंध में एक विभाग भी खोला जा चुका है। पर भारत की अंध-विश्वासी और परंपरावादी जनता से यह आशा करना कि वह शीघ्र ही इसके वास्तविक रूप को समझकर सरकारी प्रयत्नों से लाभ उठा सकेगी, ठीक नहीं। अनेक लोग उसके लिये बताये गये कृत्रिम उपायों का विरोध करते हैं। हम भी जन्म-निरोध के कृत्रिम उपायों की प्रशंसा नहीं करते और उनमें से कुछ स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक भी सिद्ध हो सकते हैं। भारतीय संस्कृति की दृष्टि से उसका उपयुक्त मार्ग संयम ही माना जा सकता है।

पर आजकल जब अधिकांश नवयुवक संयम और यौन-सदाचार की हँसी उड़ाते ही देखे जाते हैं, तो उनसे किस प्रकार आशा की जाय कि वे अपने ऊपर धर्म और नीति का अंकुश रखकर इस समस्या के समाधान का प्रयत्न कर सकेंगे ? ऐसे व्यक्तियों के लिये किसी प्रकार से सरकारी नियमों और चिकित्सा संबंधी व्यवस्था की आवश्यकता समझी गई है। श्री विश्वेश्वरैया ने देश की अवस्था को देखकर जनसंख्या की असीमित वृद्धि को देश के लिये एक भावी संकट के रूप में देखा और उसके लिये आरंभ से ही सचेष्ट हो जाने की आवश्यकता समझी।

नवीन आर्थिक जीवन-दर्शन—

श्री विश्वेश्वरैया यद्यपि अपनी बड़ी-बड़ी योजनाओं के कारण प्रायः बड़े-बड़े पूँजीपतियों से संबंधित रहे थे और वृद्धावस्था में भी उन्होंने भारतीय उद्योगपतियों की तरफ से योरोप-अमेरिका के बड़े-बड़े मोटर-कारखानों में जाकर भारत में इस कारोबार को जमाने की जाँच-पड़ताल की थी। फिर भी वे समय की गति और समाज के आर्थिक विकास को देखते हुए 'समाजवाद' के प्रश्न को उपेक्षणीय नहीं समझते थे। इस संबंध में विचार करते हुए उन्होंने इसे भी भारत की राष्ट्रीय रक्षा की समस्या के रूप में स्वीकार किया था और लिखा था—

"चिंता का एक और कारण है—समाज में कुछ वर्गों के विचारों का परस्पर विरोध। यह बात आर्थिक जीवन-दर्शन की एक नई धारा के उदय होने के कारण पैदा हो गई है। इस दर्शन के प्रचारक इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बात पर जोर देते हैं कि आय की असमानता—जिसके कारण कई लोगों को तो संसार भर के ऐश्वर्य प्राप्त हैं और कई जीवन की आवश्यकताओं से भी वंचित हैं—समाप्त हो जानी चाहिये। कुछ लोगों के पास संपत्ति है और दूसरे लोग अपने निर्वाह के लिये उन पर निर्भर हैं। इससे समाज में असंतोष की भावना फैल गई है।

"वर्तमान समय में उत्पादन के सब साधनों को संपत्तिवानों ने अपने हाथ में ले रखा है। यह कहा जाता है कि श्रम का शोषण किया जाता है और उस धन के उत्पादन में हाथ बँटाने का जो पुरस्कार मिलना चाहिए, वह नहीं मिलता। जिनके पास संपत्ति है, वे श्रमिकों को रोजगार देने में समर्थ हैं। पर वे किसी भी उद्यम से होने वाले लाभ में अपने लिये अनुपात से अधिक हिस्सा रख लेते हैं, जिससे लोगों के जीवन-स्तर में बहुत-सी असमानतायें उत्पन्न हो जाती हैं। पूँजीमूलक उत्पादन के प्रति एक शिकायत यह भी की जाती है कि बहुत से उद्योगों में प्रतियोगिता के स्थान पर पूँजीवादियों का एकाधिकार छा जाता है।

"समाजवाद यह चाहता है कि वेतन के अतिरिक्त सब प्रकार की व्यक्तिगत आय को खत्म कर दिया जाय। वह इस बात पर बल देता है कि व्यक्ति का अधिकार केवल उस आमदनी पर होना चाहिए, जिसका वह स्वयं उपार्जन करे। संपत्ति, विरासत में मिली जायदाद, ब्याज, मुनाफा जैसे अन्य साधनों से प्राप्त होने वाली आय बंद कर दी जानी चाहिए।

"समाजवाद के अनुसार उत्पादन के साधनों और वितरण पर पूरे समाज का अधिकार होना चाहिये और उन्हें सहकारी ढंग से चलाना चाहिये। एक और बात जिसने मेरा ध्यान आकर्षित किया, वह यह है कि समाजवाद निजी लाभ को उपभोक्ता माल तक ही सीमित कर देगा।"

जीवन संबंधी एक बुनियादी विचार—

यद्यपि वर्तमान समय में समाजवाद को भारत ने अपना लक्ष्य स्वीकार कर लिया है और उसके आरंभिक कार्यक्रम को प्रयोग में लाने की चेष्टा की जा रही है, पर अभी तक यहाँ के निवासी उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मूल आधार को भी नहीं समझ सके हैं। पश्चिम के जिन देशों को पूँजीवादी कहा जाता है, वहाँ भी सामान्य जनता में एक आम नारा प्रसिद्ध है—

"यदि काम नहीं करोगे
तो खाओगे भी नहीं।"

इस सिद्धांत पर विचार करते हुए श्री विश्वेश्वरैया ने लिखा था—"अपने काम से ही तो व्यक्ति अपने लिये कमा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति को इतना काम करना चाहिये, जिससे वह अपना तथा अपने परिवार का भली भाँति निर्वाह कर सके और दूसरों पर बोझ न बने। उसे इसके अलावा कुछ और भी करना चाहिये और अपने देश तथा आस-पास रहने वाले लोगों के काम आना चाहिये। अधिक कुशलता तथा लगन से किये गये कार्य का फल भी अधिक मिलता है।

कार्यकुशल बनने के लिये औसत भारतवासी के लिये यह जरूरी है कि वह पहले से अधिक परिश्रम करे और अपनी आदंतों को अनुशासन के ढाँचे में ढाले। जहाँ तक संभव हो संसार की सामान्य घटनाओं की जानकारी प्राप्त करना चाहिये। जितने भी महान् व्यक्ति संसार में हुए हैं, वे सब निरंतर परिश्रम के कारण ही महान् बन सके थे।"

हम अमेरिकावासियों को केवल 'पूँजीवादी' कहकर उन्हें स्वार्थी और उपेक्षा के योग्य समझ लेते हैं। पर यह कभी नहीं समझते कि सांसारिक प्रगति के लिये उनमें कुछ बहुत बड़े गुण भी होंगे। श्री विश्वेश्वरैया ने इसका विश्लेषण करते हुए कहा है कि—"अमेरिका आज सबसे धनाढ्य राष्ट्र है और अमेरिकावासियों का जीवन-स्तर संसार में सबसे ऊँचा है। लेकिन फिर भी जब कभी उद्यम का अवसर आता है, तो वे हर बात के लिये तैयार रहते हैं और अपना जीवन तक बलिदान करने से पीछे नहीं हटते। पर भारत में हमारा जीवन-दर्शन ही कुछ और है। इसमें न गति है और न महत्त्वाकांक्षा।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसमें संदेह नहीं कि उद्यम और उद्योग प्रत्येक देश और समाज के उत्थान के लिये अनिवार्य है। संसार में जो कुछ सुख-सुविधायें प्राप्त होती हैं, उनका मूल उद्यम ही होता है। आलसी और परिश्रम से जी चुराने वाले व्यक्ति कभी उच्च स्थान पर नहीं पहुँच सकते और न अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अनेक लोग भारतवासियों को विदेशियों से अधिक परिश्रमी बतलाते हैं। यदि इस कथन में कुछ सच्चाई भी है, तो भारतवासी अधिक श्रम किसी मजबूरी अथवा लालच से ही करते हैं। किसी उच्च आदर्श अथवा कर्तव्यपालन की भावना से वे कभी परिश्रम नहीं करते। इतना ही नहीं, यहाँ तो अधिकांश लोगों में यह भावना पाई जाती है कि जो व्यक्ति अपने हाथ से काम नहीं करता और गद्दे-तकियों पर पड़ा रहता है, वह बड़ा आदमी है। ऐसे उलटे विचार वालों की यदि अवनति हो और वे सदा अभाव और कष्टों में ग्रसित रहें, तो इसमें आश्चर्य क्या है ?

सच्चा सदाचार—

हमारे धार्मिक ग्रंथों में—स्मृतियों में पुराणों में स्थान-स्थान पर 'शुद्धाचार' और 'सदाचार' के बहुत से नियम दिये गये हैं। उनमें प्रायः शौच, स्नान, मिट्टी और जल से सब पदार्थों को शुद्ध करना, संध्या-वंदन आदि का जिक्र पाया जाता है। उनमें यहाँ तक कहा गया है कि शौच के उपरांत दाँये हाथ को मिट्टी से सोलह बार, बाँये को चौबीस बार खूब रगड़कर धोयें। गुदा को भी अनेक बार मिट्टी लगाकर धोना आवश्यक है। पर इस संबंध में कुछ भी नहीं कहा गया है कि अपने दैनिक धंधे को किस प्रकार पूरे परिश्रम से किया जाय और अन्य कार्यकर्ताओं के साथ किस प्रकार सहयोग का भाव रखकर सामाजिक सुरक्षा के उद्देश्य की पूर्ति की जाए ? हमारे यहाँ सार्वजनिक हित के दृष्टिकोण से जीवन की समस्याओं पर बहुत ही कम विचार किया गया है, जिसको एक बहुत बड़ी त्रुटि समझना चाहिए।

श्री विश्वेश्वरैया ने राष्ट्रीय चरित्र के इस अभाव को अच्छी तरह समझा और संसार के अन्य उन्नतिशील देशों की स्थिति का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्ययन करके भारतवासियों के लिये कुछ आचार-नियम बनाये। उनकी संक्षिप्त व्याख्या करते हुए उन्होंने अपनी 'मेरे कामकाजी जीवन के संस्मरण' नामक पुस्तक में लिखा है—

"आचार नियमन के लिये जो भी नियम बनाये जायें, इतने संक्षिप्त रूप में होने चाहिए कि भारतीय नागरिक उन्हें आसानी से याद रख सकें। इन नियमों की रूपरेखा को मैंने चार भागों में बाँटने का प्रयत्न किया है—

(१) कठोर काम—औसत भारतीय हर एक काम को गंभीर रूप से नहीं करता। साधारणतः वह बहुत थोड़ा काम करता है। इसका नतीजा यह है कि देश में कार्यकुशलता का स्तर और आर्थिक स्थिति बहुत हीन है। पश्चिमी देशों के लोग कड़ी मेहनत करते हैं। इससे काम ठीक होता है और उपार्जन शक्ति भी ठीक रहती है।

(२) नियोजित तथा अनुशासित कार्य—यदि काम अनुशासित ढंग से किया जाए और दिन में प्रत्येक काम के घंटे नियत कर दिये जाएँ, तो इससे काम के मूल्य में बड़ी वृद्धि होगी। अनुशासित ढंग से किये जाने वाले कठोर परिश्रम द्वारा कामगर (काम करने वाला भी) स्वस्थ रहता और दीर्घायु होता है।

(३) कार्यकुशलता—कार्यकुशलता का अर्थ है कि जहाँ तक संभव हो सके मनुष्य अपने काम को परिश्रम, महत्त्वाकांक्षा, अनुशासन तथा नियम के साथ करे। साधारणतः काम करने का स्तर जितना ऊँचा होगा, उतना ही अधिक उसका पुरस्कार मिलेगा।

(४) विनय और सेवा—पश्चिमी देशों में दूसरों के साथ मिलकर काम करने की भावना को बहुत सराहा जाता है। भारत में इस मित्रतापूर्ण भावना का अभी अभाव है। साथ में काम करने वालों या पड़ोसियों के प्रति प्रत्येक नागरिक का व्यवहार सद्भावना और मैत्रीपूर्ण होना चाहिए।

जो कोई नागरिक जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहता है और समाज का एक योग्य सदस्य बनना चाहता है, उसे चारों सूत्र सदा ध्यान में रखने चाहिये। ये सब लाभदायक गुण बिना प्रशिक्षण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के प्राप्त नहीं किये जा सकते। इस प्रकार का प्रशिक्षण शिक्षा-संस्थाओं में दिया जाना चाहिये और वयस्क व्यक्तियों को सरकार के निर्देशन में यह सब कुछ सिखाया जाना चाहिये।"

यह हमारा सौभाग्य है कि इस 'युग निर्माण' के अवसर पर श्री विश्वेश्वरैया जैसे महामानव का आविर्भाव हुआ, जिन्होंने कर्मयोग की महत्ता का जीवित उदाहरण हमारे सामने उपस्थित किया। ऐसे तो देश में इंजीनियरों और सुयोग्य निर्माणकर्ताओं का सर्वथा अभाव नहीं है, पर इतनी योग्यता होते हुए अपनी समस्त शक्तियों का लोक-कल्याण की दृष्टि से उपयोग करने वाले स्वार्थ-त्यागी व्यक्ति कठिनता से मिलते हैं। हम चाहे जिस क्षेत्र में काम करें, यदि हमारे भीतर सेवा और त्याग की भावना होगी, तो हम उसी के द्वारा आत्मोत्थान के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच सकेंगे। श्री विश्वश्वरैया इंजीनियर जैसे एक विशेष 'टेक्निकल' धंधे से संबंधित थे, पर अपनी हार्दिक लोकसेवा की भावना के आधार पर वे 'देशपूज्य जन-सेवक' बन गये। यही महानता प्राप्त करने का सच्चा मार्ग है, जिसे अपनाकर आप भी उच्च से उच्च स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं।

❐ ❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org